AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Access & Indexed
Volume 05 | Issue 09 | September 2024 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 19-23

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक दुश्चिंता पर शालेय वातावरण के प्रभाव पर एक अध्ययन

डॉ. (श्रीमती) संगीता सराफ[1] , डॉ. चंकी राज वर्मा[2]
1.प्राध्यापक, स्कूल ऑफ एजुकेशन, मैट्स विश्वविद्यालय, रायुपर, छत्तिसगड
2.सहायक प्राध्यापक, स्कूल ऑफ एजुकेशन, मैट्स विश्वविद्यालय, रायुपर, छत्तिसगड

~~~~~~

सारांश

विद्यालयों में विद्यार्थियों को अनेक प्रकार के नियमों का समय के अनुसार पालन करना अनिवार्य होता है। जैसे स्कूल समय पर पहुंचना, शिक्षकों की आज्ञा मानना, सबसे मित्र पूर्ण व्यवहार एवं सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना एवं शांति के साथ चलना फिरना समय पर खेलकूद एवं अन्य कार्यक्रमों में भाग लेना आदि इन सभी बातों का पालन करना विद्यालयों की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य एवं विद्यार्थियों की समस्त शक्तियों का विकास करते हुए उसका सर्वांगीण विकास करना होता है। शिक्षा की परिभाषा व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो आजीवन चलती रहती है और जीवन के प्राय: प्रत्येक अनुभव से उसके ज्ञान भंडार में वृद्धि होती है शिक्षा से मेरा भी प्राय: बालक था मनुष्य में निहित शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक श्रेष्ठ शक्तियों का सर्वांगीण विकास है। सर्वोच्च शिक्षा वही है जो संपूर्ण दृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है। शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा की सर्वोच्च सर्वांगीण एवं उत्कृष्ट विकास से है। मनुष्य के अंदर को संपूर्ण रूप से जानना या अभिव्यक्त करना ही शिक्षा कहलाती है। शिक्षा मानव की संपूर्ण शक्तियों का प्रगतिशील सामंजस्य पूर्ण और प्राकृतिक विकास से होता है।

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के विकास में मूलभूत आधार है और शिक्षा से मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करते हैं। अपने ज्ञान और कौशलों का वृद्धि भी करता है और शिक्षा के द्वारा ही अपने ज्ञान और व्यवहार में परिवर्तन ला सकता है जिससे वह सभ्य – सुसंस्कृत और योग्य नागरिक बन सकता है। शिक्षा के कारण ही मनुष्य विवेकशील बन जाता है इसीलिए यह कथन सत्य है जिस प्रकार पौधों का विकास खेती की अच्छी जुदाई से होती है उसी प्रकार मानव का विकास शिक्षा द्वारा होता है हमारे देश

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Dr. Chanki Raj Verma Assistant Professor, School of Education, MATS University, Raipur, Chattisgarh Email: chankirajv@gmail.com	
~~~~~~

में शिक्षा के विकास का प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में मानव के विकास पर पड़ता है शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपने अंदर समाहित शक्तियां तथा गुणों का विकास करता है मनुष्य को जीवन में अनेक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और उसका हमेशा जीवन संघर्षमय रहता है। जिससे मनुष्य संघर्ष करके अनुभव को प्राप्त करता हैं और इन्हीं अनुभवों के कारण उसे अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है। उसी शिक्षा से मनुष्य आगे बढ़ता जाता है शिक्षा का महत्व व्यक्ति के जीवन में बहुत अधिक होता है बिना शिक्षा के कोई भी व्यक्ति का व्यक्तित्व सुव्यवस्थित नहीं हो पाता है शिक्षा के द्वारा ही अपने व्यक्तिगत हित का त्याग करके समाज के हित के लिए कार्य करता है। शिक्षा केवल विद्यालय में प्राप्त हो ये जरूरी नहीं होता परंतु शिक्षा जहां हम प्राप्त कर रहे हैं वह स्थान व्यवस्थित तथा सुविधाजनक हो तो शिक्षा प्राप्त करने में विद्यार्थी की रूचि जागृत होती है वह शिक्षा अच्छी तरह से ग्रहण करता है लेकिन शिक्षा ग्रहण करने का महत्वपूर्ण स्थान विद्यालय या शाला होता है शाला का वातावरण विद्यार्थियों एवं शिक्षक के पढ़ने व पढ़ाने के अनुकूल होना चाहिए ताकि दोनों को परेशानी का सामना करना न पड़े।

भारत में शिक्षा —

भारतीय शिक्षा का इतिहास को हम देखें तो भारतीय समाज के विकास एवं छात्रावासी एवं गैर—छात्रावासी बालकों के मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक दुश्चिंता एवं शाला के वातावरण के अनुसार परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं। जिससे उनकी शिक्षा में हम निरंतर विकासशील देखने को मिलता है। प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था। इसी समय भारत की शिक्षा व्यवस्था का ह्रास हुआ क्योंकि विदेशियों के द्वारा भारत की शिक्षा व्यवस्था को जिस अनुपात से विकसित करना चाहिए उस अनुपात से विकसित नहीं हुआ जिससे विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य का सही से विकास नहीं हो पाई। जिससे विद्यार्थियों को शैक्षिक दुश्चिंता का शिकार होते गए और जिसके कारण शाला का वातावरण में भी प्रभाव देखा गया।

प्राचीन भारत में छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक दुश्चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। जिससे उनकी योग्यता का मानदंड को सही तरीके से अर्जित किया जा सके। प्राचीन समय में शिक्षा का उद्देश्य या आदर्श केवल पढ़ना नहीं वरन मनः स्मृति, स्मरण और स्वाध्याय द्वारा ज्ञान को आत्मसात करना भी था। उस समय शरीर की अपेक्षा मनुष्य की मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक दुश्चिंता को बहुत अधिक महत्व दिया जाता था। क्योंकि मनुष्य का शरीर नश्वर है जबकि आत्मा अनश्वर है। अतः मानव की आत्मा का उत्थान के लिए जप, तप और योग करके शैक्षिक दुश्चिंता को दूर किया जा सकता हैं। इसके बाद भी छात्रों में ईश्वर भक्ति एवं धार्मिकता की भावना के विकास पर भी बल दिया जाता था। क्योंकि '' सविद्या या विमुक्तये '' व्यक्ति को मुक्ति तभी प्राप्त हो सकती थी जब वह ईश्वर भक्ति और धार्मिकता की भावना से सराबोर हो।

छात्रावासी विद्यालय —

छात्रों का छात्रावास का प्रबंधन ऐसे व्यक्ति को सौंपा जाता है जो सही ढंग से कुशलता पूर्वक सारी सुविधाओं की व्यवस्था करता है जिसे छात्रावास का प्रबंधक कहा जाता है। जिसके अधीन में बहुत से कर्मचारी काम करते हैं जैसे — सफाई कर्मी, धोबी, रसोईया, भंडारी, चिकित्सक आदि जो इस सब से ठीक—ठाक प्रकार से कार्य लेते हैं। और उनके कार्य का देखभाल करना भी छात्रावास प्रबंधक का काम

होता है, छात्रावास का प्रबंधक विशेष रूप से यह ध्यान रखता है कि छात्रों के बीच लड़ाई – झगड़ा ना हो सदाचार ढंग से रहें और अपना समय उपयोग कार्य में लगाए।

गैर–छात्रावासी विद्यालय –

गैर–छात्रावासी विद्यालय में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी समय का सदुपयोग को नहीं जान पाएंगे क्योंकि उस स्कूल के बाद घर फिर उस पर माता–पिता का ध्यान ना देना जिससे बालक गलत रास्ते की ओर कदम उठाते हैं। यही सब को समझाते हुए वातावरण ऐसे ही बनाना पड़ेगा और जिससे छात्र–छात्राओं का उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं। गैर–छात्रावासी विद्यालय में छात्रों का जीवन नियमित नहीं रह पाता विद्यालय में कम समय और घर में अधिक समय देने से पढ़ाई में भी व्यवधान उत्पन्न होता है। उसमें जो भी कार्य घर में माता–पिता के द्वारा किया जाता है।

शैक्षिक दुश्चिंता –

एक तरह से हम समझना चाहे की दुश्चिंता एक प्रक्रिया में रुकावट समझी जाती है जो व्यक्ति दुश्चिंता से पीड़ित होगा वह व्यक्ति कार्य करने में पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। इसीलिए यह विचार किया जाता है कि दुश्चिंता क्रिया में रूकावट डालती हैं, जिसके कारण सीखने की गति में कमी आ जाती है लेकिन यह जो विचार हैं वह पूरी तरह से सत्य नहीं है। दुश्चिंता के कार्य को ठीक से नहीं समझने के कारण है क्योंकि दुश्चिंता सीखने में रुकावट डाल सकती है और प्रेरित भी कर सकती है।

दुश्चिंता से व्यक्ति में किसी एक वास्तविक, काल्पनिक अथवा भयसूचक स्थिति के कारण आने वाले समय में एक दूसरे के प्रति अतिरंजित आशंका से उत्पन्न भय से ग्रस्त संवेगात्मक स्थिति का बोध होता है।

शालेय वातावरण –

देश में शिक्षा के विकास का सीधा परिणाम मानव के विकास पर पड़ता है, शिक्षा से ही मनुष्य के अपने अंदर समाहित व्यक्तियों तथा गुणों का विकास करता है, जो शिक्षा के बिना असंभव होता है। शिक्षा एक गतिशील व सामाजिक प्रक्रिया है जो मनुष्य के सभी तरफ से आंतरिक शक्तियों का विकास करने में सहायता देती है। सभी प्रकार की स्थिति से अपने आप को समाजस्य करने में योग देती है। उससे उनको जीवन के कर्तव्यों और दायित्वों को पूर्ण करने के लिए तैयार करती है उनमें ऐसे विवेक जागृत करते हैं। जिससे अपने समाज राष्ट्र विषय संपूर्ण मानवता के आधार चिंतन और धर्म का कार्य कर सकें।

अध्ययन की आवश्यकता –

माध्यमिक शिक्षा आयोग १९५२ इसमें समाज एवं विद्यालय की आपसी संबंधों से इनकी उपयोगिता में वृद्धि की आवश्यकता का अनुभव एवं उसके उद्देश्य की प्राप्ति के सुझाव के लिए विद्यालय को समाज का छोटा रूप बना दिया जाए। जिससे समाज में होने वाले प्रवृत्तियों क्रियाकलापों एवं विभिन्न अवस्था को विद्यालय में प्रतिपादित किया जाना चाहिए। जिससे विद्यार्थी अपने विद्यालय जीवन में अच्छा नागरिक और प्रत्यक्ष व व्यवहारिक अनुभव प्राप्त कर सकें। छात्रावासी एवं

गैर—छात्रावासी विद्यालय जीवन सामाजिक जीवन का अंग है। जिसमें दोनों विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं को ऐसे अवसर प्रदान किए जाने चाहिए जिसका लाभ दोनों विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं को सामाजिक क्रियाओं में भाग लेने की क्षमता प्राप्त होती है। इसके लिए दोनों विद्यालय में सामाजिक क्रियाओं और अनुभवों को सरल शुद्ध एवं संतुलित रूप में बालकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। जब विद्यालय में बालकों को वही अनुभव दिया जाए तो आपसी सामाजिक संबंध अच्छा रखते हैं। उनको प्राप्त करके समाज के प्रमुख क्रियाकलापों से अवगत हो सके जिससे विद्यालय में एक छोटा समाज का निर्माण कर सकें।

अध्ययन का महत्व —

व्यक्ति जिस समाज में निवास करता है और कहीं उसका मानसिक स्वास्थ्य सही हो तो वह व्यक्ति एक अच्छा समाज का निर्माण करने में अपनी भागीदारी दे सकता है। लेकिन ऐसा समाज जहां मानसिक अस्वस्थता हो उसके बीच संघर्ष, घृणा, असुरक्षा की भावना एवं दुश्चिंता की भावना देखने को मिल सकती है जिसका नकारात्मक प्रभाव समाज के विकास पर देखने को मिलता है। जिससे समाज अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाते और वे आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा नैतिक दृष्टिकोण से पीछे हो जाते हैं। अतः समाज के सही तरीके से विकास करने के लिए विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। किसी भी अनुसंधान कार्य की उपयोगिता तब तक रहती है जब तक उस अनुसंधान से समाज एवं शिक्षा के लिए उपयोगी और याद सार्थक साबित ना हो। प्रस्तुत शोध में छात्रावासी एवं गैर—छात्रावासी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक दुश्चिंता पर शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन से प्राप्त परिणाम से विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि तथा शैक्षिक दुश्चिंता को कम करने के लिए शालेय वातावरण का निर्माण करने में मार्गदर्शन प्रदान करेगा और आगे जो शोध होगा उसको भी दिशा प्रदान करेगा। प्रस्तुत अध्ययन इस क्षेत्र के अभिभावकों, विद्यार्थियों छात्रावासी विद्यालय एवं गैर—छात्रावासी विद्यालय एवं शैक्षिक नीति निर्देशकों के मार्गदर्शन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सहायक होगा।

अध्ययन की सार्थकता —

किसी भी छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय का वातावरण एवं वहां के शिक्षा का स्वरूप बालक की योग्यता तथा क्षमता को प्रभावित करती है। छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी दोनों विद्यालय में भिन्न—भिन्न आदत के बालक भिन्न—भिन्न रुचि और दृष्टिकोण रखने वाले विद्यार्थी आते हैं। जिस तरह से बालक का शारीरिक विकास होता है लेकिन बाहरी वातावरण के संपर्क में आने से छात्रावासी विद्यार्थी के शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन देखने को मिलता है। इसके परिवर्तन से शाला का वातावरण तथा बाहरी वातावरण का प्रमुख योगदान होता है। अभी हम देखें तो सभी स्तरों में स्पर्धा का माहौल है विद्यार्थियों में भी हमें यह देखने को मिलता है। इस स्पर्धा के कारण बाकी अपने सहपाठियों से पीछे रहना पसंद नहीं करते और साथ ही आगे अच्छी संस्था में प्रवेश के लिए प्रयास करते हैं। जिसमें उनको रोजगार उपलब्ध हो सके लेकिन कई विद्यार्थियों को रोजगार नहीं मिल पाने से शैक्षिक रूप से चिंतित रहते हैं। अच्छा पढ़ाई लिखाई और परिणाम अच्छा प्राप्त करने से शाला का वातावरण की उपस्थिति अनिवार्य है। सभी संबंधित शोध अध्ययनों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तावित शोध समस्या पर छात्रावासी एवं गैर—छात्रावासी बालकों की मानसिक स्वास्थ्य शैक्षिक दुश्चिंता पर शालेय वातावरण

का प्रभाव एवं शोध अध्ययन का अभाव पाया गया। इस शोध में इसके अभाव की पूर्ति का माध्यम बना है प्रस्तुत अध्ययन से यह ज्ञात होगा कि शाला का वातावरण मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक दुश्चिंता को प्रभावित करता है। इसके परिणाम से छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, प्रशासकों एवं शैक्षिक नीति निर्धारणों के मार्गदर्शन हेतु लाभप्रद होंगे। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि हेतु प्रयास किए जा सकेंगे तथा शालेय वातावरण इस प्रकार निर्मित किए जा सकेंगे जिससे कि विद्यार्थियों में शैक्षिक क्षमता कम हो सके।

अध्ययन का उद्देश्य :—

१. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शैक्षिक दुश्चिंता एवं शालेय वातावरण का लिंग एवं परिवेश पर प्रभाव का अध्ययन करना।

२. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शैक्षिक दुश्चिंता एवं शालेय वातावरण के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

३. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शैक्षिक दुश्चिंता एवं लिंग एवं परिवेश के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

४. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यालय के विद्यार्थीयों की शालेय वातावरण एवं लिंग व परिवेश के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

संदर्भ सूचि :—

१. शिक्षण — मरिअप वेबस्टर ऑनलाइन शब्दकोष से ।

२. पवन सिन्हा — भारतीय आधुनिक शिक्षा, मोतिलाल नेहरू कॉलेज साउथ केम्पस दिल्ली विश्वविद्यालय, अक्टूबर २०१५।

३. डॉ. मुकेश श्रीवास्तव, डॉ. पुष्पलता शर्मा — शिक्षा के दार्शनिक दृष्टिकोण।

४. प्रिंसटन विश्वविद्यालय (अंतिम अद्यतन अज्ञात) अभिगमित Princeton.edu जून २००७।

५. मानसिक स्वास्थ्य— नई समझ, नई आस (विश्व स्वास्थ्य रिपोर्ट २००१)

6. www.scotbuzz.org

७. डॉ. गौरव गुप्ता — असाध्य नहीं मनोरोग हिन्दुस्तान लाइव, अक्टूबर २००९.

८. डॉ. के. बला नन्द — स्कूली बच्चों में भय, तनाव एवं दुश्चिंता के प्रभाव अक्टूबर २०१५, भारतीय आधुनिक शिक्षा पेज नं. ११

■ ■ ■